Journal of Advances and Scholarly Researches in Allied Education

Vol. VI, Issue No. XII, October-2013, ISSN 2230-7540

REVIEW ARTICLE

हरिश्चन्द्र वर्मा के उपन्यास डॉक्टर डमरू गोपाल में संस्कृति दर्शन

AN INTERNATIONALLY INDEXED PEER REVIEWED & REFEREED JOURNAL

www.ignited.in

Journal of Advances and Scholarly Researches in Allied Education
Vol. VI, Issue No. XII, October-2013, ISSN 2230-7540

हरीशचन्द्र वर्मा के उपन्यास डॉक्टर डमरू गोपाल में संस्कृति दर्शन

Randhir Singh*

Asst. Professor, Seth Tek Chand College of Education, Kurukshetra

----------X----------

लेखक की मान्यता है कि मानव–प्रकृति का पत नही विकृति और मानव–प्रकृति का उत्थान ही संस्कृति है। मनुष्य की प्रकृति में पशु भी है और पशुपति भी 'पशु वह है जिसे साधकर का ममें लाया जाता है, पशु पति प्रकृति का वह सात्विक पक्ष है, जो पशु को अनुशासित रखता है। उपन्यास का नायक डमरू गोपाल (शिवगोपाल) प्रकृति के वशीभूत है। वह अपने भीतर की पाश्विक प्रवृत्तियों पर विजय पाने का बार–बार व्रत लेता है। वह अपनी पत्नी शोभा के सिर पर हाथ रखकर शपथ लेता है कि ''वह भविष्य में मदिरा को छुए गातक नहीं।''

'डॉक्टर डमरू गोपाल' उपन्यास में लेखक का संस्कृति–दर्शन के साथ–साथ शिक्षा–सम्बन्धी चिन्तन भी उभरकर आया है। शिवगोपाल ने मैट्रिक की परीक्षा गाँव के स्कूल से प्रथम श्रेणी में पास की फिर इण्टरमीडिएट में भी शिवगोपाल को प्रथम श्रेणी प्राप्त हुई। शिब्बू के अन्दर आगे पढ़ने की तीव्र इच्छा थी, किन्तु घर की आर्थिक स्थिति पूरी तरह जवाब दे चुकी थी। लाला जी स्वंय भी बहुत चाहते थे कि उनका शिब्बू आगे पढ़–लिखकर एक अच्छा जीवन बिताये, किन्तु गाँव से दूर किसी महाविद्यालय या विश्वविद्यालय में उसे प्रवेश दिलाने का जोखिम उठाना उनके बूते से बाहर था। ठाकुर साहब के मंत्री बनते ही शिब्बू को अपने कर्मो का फल मिलने लगा था।

उपन्यासकार ने शोभा को एक जिज्ञासु, कर्म निष्ठ, सच्ची शोध–छात्रा के रूप में तथा डॉ॰ अनिल को आदर्श निर्देशक के रूप में चित्रित किया है। डॉ॰ अनिल शोभा के इरादे से प्रसन्न होते हैं। उसमें सच्ची लगन और पक्के इरादे को देखकर उन्हें लगा कि ''आज के घोर स्वार्थ, भौतिकता और तिगड़म के युग में भी कुछ व्यक्ति हैं, जो ज्ञान और गुरु के प्रतिआस्था रखतेहैं।''

भ्रष्ट राजनीति का विश्लेषण : शिब्बू ने सरदार लाखन सिंह के लड़के जोरावर सिंह के साथ रहकर तैरना, कुश्ती करना, भाला चलाना, मोटर साइकिल चलाना, पिस्तौल चलाना सीख लिया था। जोरावर सिंह से उसकी दोस्ती बहुत गाढ़ी थी। जोरावर सिंह ने कई बार उसके सामने डकैती करके पूंजी बनाने का प्रस्ताव रखा, किन्तु शिब्बू का मन इसके लिए तैयार न हुआ।

प्रेम और विवाह : 'डाक्टर डमरू गोपाल' उपन्यास में प्रेम–विवाह के स्वरूप और परिणाम पर भी प्रकाश डाला गया है। शोभा के रूप और शील को लेकर शिब्बू ने समय–समय पर जिन प्रेम–गीतों की रचना की थी, ''उन्हें 'चाँदनी के गीत' नाम से संकलित कर लिया। इन गीतों में उसके अल्हड़ मन के सहज उद्गार संगीतात्मक रूप में व्यक्त हुए थे। 'चाँदनी के गीत' में रूपा सक्ति और रोमांस के गीत थे।''

शोभा और सुखलाल के प्रेम–विवाह में सारे प्रेम–सम्बन्ध सिमटकर समा गये थे, ''वे एक दूसरे के सहायक, अभिभावक हमजोली, हितकारी, प्रेरक–पोषक और न जाने क्या–क्या थे।'' शोभा और सुखलाल का प्रेम–विवाह समानुराग पर आधारित है। अतः सफल प्रेम–विवाह का आदर्श उदाहरण बन जाता है।

लोक–संस्कृति : 'डाक्टर डमरू गोपाल' उपन्यास में लोक–संस्कृति का भी प्रसंगवश सजीव रूप में समावेश हुआ है। एक दिनछात्रावास के प्रांगण में रागिनी–प्रतियोगिता आयोजित की गयी। यह आयोजन छात्रावास के वार्डन डॉक्टर शिव गोपाल उर्प डमरू गोपाल द्वारा किया गया था, जिससे लखमीचन्द, मांगेराम, धनपत, मेहर सिंह, बूली आदि प्रसिद्ध रागिनीकारों और 'साँगियों की रागिनियाँ' पेश की गयीं। बस क्या था। संगीत की सरिता बह निकली, गायकों की अदाकारी गज़ब की थी। मिट्टी के घड़ों को वाद्य–यन्त्रों की जगह प्रयोग में लाया जा रहा था। मिट्टी के घड़ों से पूफटती ध्वनियों के संगम से सिद्ध हो रहा था कि भारत की मिट्टी में कितना संगीत भरा पड़ा है।

रागनियाँ सत्यवादी हरिश्चन्द्र, ध्रुव भक्त, राजा बलि, भक्त पूर्णमल, राजा भर्तृहरि, राजा मोर ध्वज, रूप–बसन्त, शाही लकड़हारा आदि साँगों से ली गयी थीं। भारतीय लोक–संस्कृति अपने पूर्ण रूप में लोक–संगीत में साकार हो रही थी। गायकों ने संगीत की डोरी से श्रोताओं को बाँध रखा था। सभी श्रोता मंत्र–मुग्ध से बैठे थे। जैसे सब साँसें साधे समाधि में लीन हों।

जब निर्णायकों का निर्णय सुनाया गया, तब उसी निर्णय से क्षुब्धचार–पाँच गुण्डे लड़के शराब के नशे में चूर होकर मंच पर कूद पड़े। उन्होने सारे घड़े लाठियों से फोड़ डाले, कुछ गायकों को मंच से नीचे डाल दिया। सारा संगीत कलह के कोलाहल में डूब गया। लोक–संस्कृति लुढक कर गुण्डा गर्दी के अंधेरे गर्त में जागिरी। भारत की धरती का संगीत टुकड़े–टुकड़े हो बिखरगया।

'डाक्टर डमरू गोपाल' उपन्यास में लोक–संस्कृति की यह संक्षिप्त झाँ की बड़े ही मोहक रूप में प्रस्तुत की गयी है। गायन और वादन के स्वरूप को बड़े कौशल के साथ दर्शाया गया है।

www.ignited.in

लेखक ने यह भी स्पष्ट संकेत किया है कि अधीरता और पारस्परिक द्वेष लोक–संस्कृति के प्रसार के मार्ग में बाधक है।

'डाक्टर डमरू गोपाल' एक सुचिन्तित औपन्यासिक कृति है। इसमें संस्कृति–दर्शन के रूप में पूरा समाज–दर्शन और व्यवहार–दर्शन प्रस्तुत किया गया है। पूरेचिन्तन में राष्ट्र–प्रेम की अन्तर्धारा बहती प्रतीत होती है। यह रोचक और चिन्तनपूर्ण उपन्यास है। उपन्यास की सफलता इस तथ्य में निहित है कि चिन्तन कहीं भी नीरसन हीं होने पाया है। चिन्तन ऊपर से थोपा हुआ नहीं है। वह रोचक प्रसंगों, परिस्थितियों, पात्रों के टकराव से स्वयं उभरता है। इस उपन्यास में सरसता और सोद्देश्यता का, रोचकता और चिन्तन का उत्कर्ष एक साथ देखने को मिलता है। 'डाक्टर डमरू गोपाल' एक सजीव, रोचक एवं चिन्तनपूर्ण उपन्यास है, जो शिक्षा–जगत् के साथ ही पूरे जीवन और परिवेश के विविध पक्षों से जुड़े चिन्तन को व्यापक संस्कृति–दर्शन के रूप में प्रस्तुत करने में सफल रहा है।

संदर्भ :

डॉ. हरिश्चन्द्रवर्मा, डॉक्टरडमरूगोपाल, पृ. 3

वही, पृ. 56

वही, पृ. 24

वही, पृ. 34

वही, पृ. 130

वही, पृ. 140

Corresponding Author

Randhir Singh*

Asst. Professor, Seth Tek Chand College of Education, Kurukshetra

E-Mail –